

इस अंक में...

- 7 सम्पादकीय
- 9 समसामयिकी घटना संग्रह
- 10 समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ
- 17 राज्यों का बजट : 2023-24

19 आर्थिक घटना संग्रह

- दिल्ली हवाई अड्डा दक्षिण एशिया का सर्वश्रेष्ठ हवाई अड्डा घोषित
- भारतीय रेलवे 2030 तक नेट जीरो कार्बन उत्सर्जक बन जाएगा

23 राष्ट्रीय घटना संग्रह

- प्रधानमंत्री मोदी ने लॉन्च किया 'कॉल बिफोर यू डिग' ऐप
- हुबली में दुनिया के सबसे लम्बे रेलवे प्लेटफॉर्म का उद्घाटन
- 23वाँ राष्ट्रमण्डल कानून सम्मेलन गोवा में सम्पन्न

27 अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह

- दुनिया की 26 प्रतिशत आबादी के पास पीने का सुरक्षित पानी नहीं
- भारत दुनिया का सबसे बड़ा हथियार आयातक देश बना
- भारत-बांग्लादेश मैत्री पाइपलाइन का शुभारम्भ

31 खेल खिलाड़ी

- भारतीय पैरालम्पिक समिति ने मेकर्स हाइव और विलय स्पोर्ट्स के साथ किया समझौता
- कर्नाटक ने खत्म किया सूखा 54 वर्ष बाद जीती संतोष ट्रॉफी
- लियोनेल मेसी ने कॅरियर क्लब का 700वाँ गोल किया

- 35 विज्ञान समाचार
- 38 महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह
- 40 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न

लेख

- 44 शिक्षाप्रद लेख—लालच तेरे रूप अनेक
- 45 वित्तीय लेख—संकट में अमरीकी बैंक : एसवीबी
- 46 मानवाधिकार लेख—आज भी बुनियादी जरूरतों से वंचित हैं अरबों लोग
- 47 प्राकृतिक संसाधन लेख—भारत में लिथियम का भण्डार और इससे जुड़ी सम्भावनाएं
- 49 भौगोलिक लेख—जेट स्ट्रीम एवं भारतीय मानसून की क्रियाविधि
- 50 समुद्री संसाधन लेख—नीली अर्थव्यवस्था और सम्बन्धित चुनौतियाँ
- 51 प्रतिरक्षा लेख—भारतीय तटरक्षक बल : समुद्री सीमाओं का सशक्त प्रहरी
- 52 प्रेरक लेख—स्वयं की मदद करें
- 54 सामयिक लेख—भारत का हरित ऊर्जा भविष्य
- 56 विशेष लेख—विकास का पैमाना तय करने में जनगणना की आवश्यकता

विविध/सामान्य

- 77 प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता
- 79 तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक-154 का परिणाम
- 81 रोजगार अवसर

हल प्रश्न-पत्र

- 57 एस.एस.सी. दिल्ली पुलिस हैड कॉस्टेबिल (मंत्रिस्तरीय) परीक्षा, 2022

मॉडल हल

- 67 आगामी उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

संस्थापक सम्पादक : स्व. श्री महेन्द्र जैन

सम्पादक : राहुल जैन

रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा-2

ई-मेल : सम्पादकीय : publisher@pdgroup.in कस्टमर केयर : care@pdgroup.in

सम्पादकीय ऑफिस : 1, स्टेट बैंक कॉलोनी, खन्दारी, आगरा-मथुरा बाईपास, आगरा-282 005

फोन-2531101, 2530966

दिल्ली ऑफिस : 4845, अंसारी रोड, दरियागांज, नई दिल्ली-110 002

फोन-011-23251844, 43259035

पटना ऑफिस : पारस भवन (प्रथम तल), खजांची रोड, पटना-800 004

मो-09334137572

हैदराबाद ऑफिस : 16-11-23/37, मूसारामबाग, टीगन गुडा, आर.टी.ए. ऑफिस के सामने मेन रोड, (यूनियन बैंक के बगल में), हैदराबाद-500 036 (तेलंगाणा)

मो-09391487283

हल्द्वानी ऑफिस : 8-310/1, ए. के. हाउस, हीरानगर, हल्द्वानी, जिला-नैनीताल-263 139 (उत्तराखण्ड)

मो-07060421008

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे-इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनिकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुंचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी 'सक्सेस मिरर' की नहीं है.

परिवर्तन की चुनौती को स्वीकार कीजिए



परिवर्तन, आशंका एवं भय से संघर्ष की चुनौती प्रस्तुत करता है। सफल वे होते हैं, जो इस चुनौती को स्वीकार करते हैं। ध्यातव्य यह है कि प्रत्येक परिवर्तन कुछ नवीनता लेकर आता है और कुछ नवीन करने की प्रेरणा प्रदान करता है। इसके लिए अपेक्षित है सकारात्मक सोच। परिवर्तन वस्तुतः विकास की पहली सीढ़ी है। अतएव परिवर्तन को विकास का हेतु बना लेने वाला व्यक्ति ही यह कह सकता है कि मैं परिस्थितियों की सन्तान न होकर, उनका जनक हूँ। प्रकृति में उपलब्ध भग्नावशेष परिवर्तन की स्वाभाविकता की गवाही देते हैं। ऐसे उदाहरण उपलब्ध हैं जब सकारात्मक चिन्तन-पद्धति ने कैंसर जैसे घातक रोग द्वारा उत्पन्न परिस्थितियों को भी उपयोगी कार्य करने की प्रेरणा बना दिया।

वर्तमान सुविधावादी संस्कृति ने हमारे सामने विकल्प के चयन के अवसर प्रस्तुत किए हैं, परन्तु साथ ही चुनौतियों को स्वीकार करने के प्रति संकोची बना दिया है।

परिवर्तन किसी प्रकार का हो, स्थान का हो, परिस्थितियों का हो अथवा जीवन सम्बन्धी हो जिसे हम मृत्यु कहते हैं—वह सदैव आशंका एवं भय का हेतु होता है, परन्तु विचारणीय यह है कि क्या जीवन और जगत् परिवर्तन रहित हो सकते हैं—वे निरन्तर परिवर्तनशील हैं—हम चाह करके भी, प्रयत्न करके भी परिवर्तन की प्रक्रिया को बाधित नहीं कर सकते हैं, तब फिर हम परिवर्तनों को चुनौतियों के रूप में स्वीकार क्यों न करें? वस्तुस्थिति भी प्रायः यही है कि परिवर्तन चाहे जिस प्रकार का हो—सायास हो अथवा अनायास अथवा अप्रत्याशित हो, वह सदैव एक चुनौती के रूप में आता है और हमें कुछ नवीन करने की प्रेरणा प्रदान करता है। इसी संदर्भ में हम यदि प्रत्येक विपत्ति एवं विपरीत परिस्थिति को क्षति अथवा असफलता के रूप में ग्रहण न करके मात्र परिवर्तन एवं तज्जन्य चुनौती के रूप में स्वीकार करें, तो क्या यह हमारी सकारात्मक एवं सशक्त चिन्तन-पद्धति नहीं कही जाएगी? ब्रिटेन के प्रधानमंत्री श्री विन्स्टन चर्चिल ने युद्ध में प्रारम्भिक पराजयों को लक्ष्य करके कहा था कि सफलता उसको प्राप्त होती है, जो असफलताओं के मध्य उत्साह बनाए रखता है। स्पष्ट है, जो विपत्ति के सामने ताल ठोककर खड़ा हो जाए उसके लिए विपत्ति अथवा विषम परिस्थितियों का कोई महत्व नहीं रह जाता है। बेंजामिन डिज़रैली ने बहुत ठीक कहा है कि “We are not creatures of circumstances, we are creators of

circumstances” अर्थात् हम परिस्थिति द्वारा उत्पन्न जीव न होकर परिस्थिति के जनक हैं। परिवर्तन की स्थिति में व्यक्ति में एक विशेष प्रकार की मनोवैज्ञानिक एवं भावात्मक लचक विकसित हो जाती है, जो जीवन एवं चेतना के विकास के लिए आवश्यक है। प्रत्येक प्रकार के परिवर्तन में हमारी आन्तरिक शक्ति उभर कर आती है और हमारा विकास होता है। दुनिया भी इसी तरह चलती है। परिवर्तनों के साथ जगत् का विकास होता है, होता आया है। हमारे मनोवेग विकास की इस प्रक्रिया में ईंधन का काम करते हैं। अतएव स्पष्ट है कि परिवर्तन हमारे जीवन और जगत् की एक स्वाभाविक स्थिति है। प्रकृति में उपलब्ध भग्नावशेष, चट्टानें एवं अस्थि-पिंजर विकास की प्रक्रिया की कहानी को मुखर करते हैं। रोना, दुःख प्रकट करना, निराशा, क्रोध एवं असंतोष आदि मनोभावों को प्रकट करना हमारी नियति है, परन्तु इसके साथ हमारी यह भी नियति है कि हम आशावान बनें, सँभल कर खड़े हों और अधिक शक्तिशाली बनें और अन्य व्यक्तियों को परिवर्तन की चुनौती स्वीकार करने की प्रेरणा प्रदान करें। स्मरण रखिए—हम कभी अकेले नहीं होते हैं, हमारा भाव जगत् हमें समाज से सम्बद्ध रखता है, जो सकारात्मक सोच रखते हैं, वे अधिक शक्तिशाली बनकर जीवंतता प्राप्त करते हैं, जो ऐसा नहीं करते हैं, वे निराश होकर बैठ जाते हैं। प्रकृति का यह रहस्य ध्यातव्य है कि सकारात्मक चिन्तन हमें सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करके विजय का अधिकारी बनाता है।